मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 68, सितम्बर(प्रथम), 2019

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी:

अनुपमेय लोकरक्षक हैं कृष्ण !

डॉ॰ घनश्याम 'बादल'

कृष्ण के इतने विविध रूप हैं कि उनका बखान करना असंभव प्रायः है । उनका जन्म ही अपने आप में दिव्य है । वे जन्मते ही चमत्कार करने लगते हैं । बाल्यावस्था में ही इतना कुछ कर जाते हैं कि विश्वास नहीं होता है । उनकी लीलाएं अपरंपार हैं । मिथक उन्हे भगवान विष्णु के पूर्णावतार मानते हैं जो धरा पर धर्म की ग्लानि रोकने , अधर्म का अभ्युथान करने , धर्म की संस्थापना करने , दुष्टों का संहार करने के लिए अवतरित हुए । कृष्ण अपने गीता के उपदेश में स्वयं को 'यदा यदा हि धर्मस्य गलार्निभवति भारत' श्लोक के मध्यम से खुद को भगवान घोषित करते दिखते हैं ।

हर युग में अवतरित:

कृष्ण के भक्त मानते हैं वे राम , कृष्ण, नरसिंह , वराह , शूकर , परषुराम या दूसरे और रूपों में हर युग में अवतरित होते रहे हैं और भक्तों की रक्षा व खलों का नाश करते रहे हैं । द्वापर में वे कृष्ण के रूप में पूतना , केशी , शकटासुर वृषभासुर , कंस , शिशुपाल , जरासंध , व दुर्योधन आदि का वध करते हैं तो पांडवों, द्रोपदी , कुंती , विदुर , सुदामा जैसे भक्तों की रक्षा भी करते हैं । इतना ही नहीं वे स्वयं ही नहीं दूसरों को माध्यम बनाकर भी यह नेक काम करते हैं। उदाहरण के लिए जब वचनबद्ध होने के नाते भीष्म को अधर्मी दुर्योधन के पक्ष में खड़ा होना पड़ता है तो वे युक्तिपूर्वक उनके वध के लिए शिखंडी को उनकी मुक्ति का माध्यम बना आगे कर देते हैं ।

मोह लगाएं , मोह हटाएं:

अद्भुत कृष्ण कभी वे स्वयं मोह का कारण बनते हैं तो कभी मोह के मोहजाल को काटने का माध्यम बनते हैं । गोकुल में रहकर वे जनसाधारण के प्रतिनिधि गोपियों व ग्वालों को ऐसे मोहपाश में बांध लेते हैं कि उनके बगैर वे जीने की कल्पना तक नहीं कर पाते और कृष्ण के मथुरा जाने पर या तो वहीं जाकर बसने को उद्यत हो जाते या कृष्ण को वापस लाने का हर प्रयास करते हैं। जब उन्हे समझाने के कृष्ण उद्धव को भेजते हैं तो वे स्पष्ट 'उधौ मन नहिं दस बीस , एक हुतौ गयौ स्याम संग अब कौ अवराधै ईस ' की बात कह कर स्वयं को बड़ा विद्वान मानने वले उद्वव को लाजवाब कर देते हैं । पर ,

जब महाभारत के युद्ध में अर्जुन मोहग्रस्त होते हैं तो वही कृष्ण एक दो नहीं पूरे अठारह दिन तक उनके मोह को भंग करने के लिए गीता का उपदेश देते हैं और तब तक देते हैं जब तक अर्जुन मोहपाश से बाहर नहीं आ जाते । तो कह सकते हैं कि कृष्ण मोह जाल बुनते भी हैं और मोह भंग भी करते हैं ।

युगदृष्टा कर्मपुरुष:

महाभारत के समय कृष्ण दुनिया को कर्म, अकर्म व विकर्म के भेद का पाठ पढाते हुए फल की आसक्ति से दूर रहते हुए 'कर्मण्येवाधिकारमस्ते मा फलेषु कदाचन ....' द्वारा कर्म करने की प्रेरणा देते हैं , अज्ञान अकर्मण्यता से बचने की राह दिखाते हैं अतः कह सकते हैं कि द्वापर में भी वे ऐसा उपदेश देते हैं जो आज भी उपयोगी है। इस दृष्टि से कृष्ण युगदृष्टा ठहरते हैं ।

प्रेम के बस में:

कृष्ण को जानना बड़े बड़े ज्ञानियों के बस की बात भी नहीं रही , वे ज्ञानयोग की बजाय सरल प्रेम से समझ में आते हैं तभी तो अनपढ़ गोपियां व ग्वाले तो उन्हे जान जाते हैं मगर योगी , परमयोगी नहीं । सच कहा जाए तो कृष्ण प्रेमके ढाई अक्षर से ही वश में होते हैं । ज्ञानियांे को छका देने वाले कृष्ण को अनपढ़ प्रेमासक्त गोपियां 'छछिया भरी छाछ' पर नाच नचा देती हैं । कृष्ण कलुषित मन वालों के छप्पनभोग छोड़ कर साफ मन वालों के साग भात से खुश हो जाते हैं । द्वारिकाधीष होकर भी सुदामा केा चरण धोते हैं। मित्र का मान रखते हैं । मगर दंभी , अहंकारी , अपशब्दों का प्रयोग करने वाले अपनी बुआ के बेटे शिशुपाल का वध कर देते हैं ।

लोकरक्षक कृष्ण:

कृष्ण मानव व ईश्वर दोनों रुप में लुभाते हैं। उनका हर कार्य जन कल्याण के लिए व दमितों , त्रस्तों के हितार्थ ही होता है। महाभारत के युद्ध में वे साम ,दाम, दंड ,भेद सब अपने प्रियों की जीत के लिये आजमाते हैं । वहां वे न उचित देखते हैं, न अनुचित, न झूठ से कतराते हैं न छल से , न अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने में पीछे हटते हैं न प्रेम के लिए अपहरण करने से डरते हैं न ही अपनी स्वयं की बहन सुभद्रा का अपहरण करने की सलाह अर्जुन को देने से कतराते हैं । कृष्ण का हर समय त्रस्तों के पक्ष में खड़े होना उनके लोकरक्षक होने का प्रमाण है । वे स्वयं महायोद्धा हैं पर परिस्थिति के अनुसार रण से भाग रणछोड़ बनने से भी सकुचाते नहीं ।

'मैनेजमेंट गुरु' :

आज के मानको से कृष्ण 'मैनेजमेंट गुरु' हैं , दुनिया भर के सी ई ओ हैं , कमांडिंग मैन हैं और सबसे बढ़कर व्यवहारिक हैं । वे अवसर को कैसे भुनाया जाए इस बात को सिखाने वाले शिक्षक हैं , वे मास्टर माइंड पॉज़िटिव सोच के लीडर कहे जा सकते हैं । वे अपने बलबूते पर न केवल द्वारिका का निर्माण करते हैं अपितु पांडवों से भी इंद्रप्रस्थ बसवाकर इंपोसिबल को पॉसिबल करने वाले उत्प्रेरक कहे जा सकते हैं जो खुद आगे रह कर लीड़ करते हैं , उदाहरण पेश करते हैं व अपनी टीम से असंभव को संभव करवा लेते हैं ।

सबकी आज़ादी के हिमायती:

वे सबकी आज़ादी के हिमायती हैं ,अन्याय के खिलाफ हैं व समातामूलक समाज की स्थापना के संवाहक बनते हैं । वे शत्रु के किले में जाकर सर्जिकल स्ट्राइक करने वाले साहसी नायक हैं जो अपनों को संकट में देख , सारी प्रतिज्ञाएं भूल सुदर्शन चक्र उठाने में ज़रा भी नहीं हिचकते वे उदार भी हैं और 'शठे शाठ्यं समाचरेत ' का इस्तेमाल करने में भी गुरेज नहीं करते । अस्तु कृष्ण हैं उनका न कोई जोड है न ही तोड़ । वे कृष्ण हैं केवल कृष्ण ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें